

— *अव hinunterschlingen*: एवानेवाव सा गर्त्तु AV. 16, 7, 4. stets med. nach P. 1, 3, 51. Vop. 23, 43. अवगिरिमाणैश्च पिशचैर्मिस्रोणितम् BHATT. 8, 30. reflex. अवगिरते, अवगोर्ष P. 3, 1, 87, Vārtt. 10, Sch. अवगोर्ष hinuntergeschlungen Pat. zu P. 3, 1, 15 in der Calc. Ausg. — intens. उल्लूखलसुतानामवेदिन्द्र जल्लुल: RV. 1, 28, 1.

— उद् ausspeien, ausspritzen, ausgiessen, von sich geben, entlassen: फेनं पित्रामि यमिमे वत्सा मातृणां स्तनान्पिबन्त उद्गिरति MBh. 1, 712. अमृतेनाभितृप्तस्य सारमुद्गिरतः पुरा। पितामहस्य 3, 3604. वक्त्राच्छेषितमुद्गिरन् R. 4, 48, 22. उद्गोर्षावगोर्षस्य वा मन्त्रो रामन्त्रः Pat. zu P. 3, 1, 15 in der Calc. Ausg. सवातमुद्गिरेद्दीप्तं वामिनी रजसा युतम् Suçr. 2, 397, 1. वर्षोदकमुद्गिरता अवणात्तविलम्बिना कदम्बेन Mrákū. 88, 6. घटा हि राज्ञामभिषेककाले महाम्भसेवायमुद्गिरति Pañkāt. III, 267. जालोद्गोर्षः — केशसेस्कारधूपैः Megh. 33, 62. औत्पातिको मेघ इवाश्मवर्ष महीपतेः शासनम्जगार Ragh. 14, 53. शास्त्रं गुरुमुखोद्गोर्षम् Suçr. 1, 14, 11. MBh. 12, 12871 (s. d. simpl. u. 2). अभ्युन्नताङ्गुष्ठप्रभाभिर्निनेपणाद्वागमिवोद्गिरतौ — तच्चरौ Kumāras. 1, 33. उद्गोर्षकर्णोद्गार hervorgerufen Gīt. 1, 36. (aus der Scheide) herausspringen, herausfallen (wohl med. oder pass.) Varāh. Brh. S. 49, 5. — Vgl. उद्गार fgg. — caus. उद्गिरयति (!) von sich geben, ertönen lassen: पद्गुरुरयं वेत्यन्दिव्यगिरा गीतमुद्गिरयति Pañkāt. 221, 13. Ist viell. denom. von गिर.

— उप einschlucken: स्नेहनस्यं न चोपगिलेत् Suçr. 2, 237, 8.

— नि hinunterschlucken, verschlingen: श्रुतापोष्ठा नि गिरति AV. 5, 18, 7. मा मां दुग्धा मियसा नि गीरेत् RV. 5, 40, 7. असंखादन्निगिरित् Lātj. 4, 11, 13. पिण्डमयेकं निगणान्ति Pār. Grh. 3, 10. Gobh. 3, 6, 3. निगीर्य सर्वा आधीः Kātj. Çh. 13, 3, 20. निगीर्य, निगीर्यते, निगीर्यमाणा (mit act. Bed.) MBh. 1, 8238. fg. निगीर्ण verschlungen 1329. R. 3, 53, 59. Kathās. 25, 58. 26, 120. Bhāg. P. 3, 25, 33. 5, 13, 9. 6, 12, 31. (तम् महामत्स्यो निगीर्णवान् Kathās. 25, 47. भूमिरेतौ निगिरति MBh. 12, 663. 13, 2180. (वत्सराजः) निगीर्णवमुधातलः Kathās. 19, 118. निगीर्ण verschluckt so v. a. nicht ausgedrückt, अनिगीर्ण nicht verschluckt so v. a. ausdrücklich erwähnt Śāh. D. 17. — caus. pass. निगीर्यते und निगीर्यते P. 8, 2, 21, Vārtt. 1, Sch. — intens. gurgelnd einschlucken: आ कृति ग्मे पसा नि गल्गलति धारका infigit in foramen penem et cunnus glutit (illum) VS. 23, 22. Vgl. P. 3, 1, 24 (भावगर्क्याम्). निजेगिल्यते Sch.

— निम् ausspeien: कण्ठनिगीर्णं (शोणित) R. 3, 35, 62.

— सम् verschlingen: यदन्नमदयन्तेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत संगृणामि AV. 6, 71, 3 (vgl. aber 119, 1). संगीर्य 135, 3. संगिरति घासम् P. 1, 3, 52, Sch.

3. ग्र (जागृ Dātup. 24, 64), जागर्ति P. 6, 1, 192. जागरति MBh. 12, 7823. जागृमि 6518. जागृतम् P. 7, 3, 85. जाग्रति P. 6, 1, 189, Sch.; जागृयात्; जागृक्, जागृत; अजागर, जागरत्; जाग्रत्, जाग्रती, जाग्रमाण MBh. 13, 1274; जागर 1. sg., जागार 3. sg., जागृवांसम् u. s. w.; vgl. P. 6, 1, 8, Vārtt. 1. Formen wie जागरित्यन्, जागरित् finden sich erst in TS. und Çat. Br.; die nachvedische Sprache dagegen hat überall die reduplicierte Form: जजागर und जागरा चकार P. 3, 1, 38. 7, 3, 85. Vop. 8, 90. 9, 29, 30. जजागर्वम् und जजागृवंम्, जजागराण und जजाग्राण Vop. 9, 30. 26, 132. 135. जागरिष्यति, जागरिता Pat. zu P. 7, 2, 10. जागरिष्यामहे R. 2, 86, 4. अजागरित् P. 7, 2, 5. Vop. 9, 29. prec. जागर्यात् P. 3, 4, 104, Sch. pass. aor. impers. अजागारि 7, 3, 85. Vop. 24, 6. part. जागरित P. 7, 2, 11. 3, 85. ab-

solut. जागरम् 7, 3, 85. 1) wachen; wachsam sein: ऊर्ध्वः सुषेष्वा जागर AV. 14, 4, 25. तौ ते प्राणस्य गोप्तरौ दिवा नक्तं च जागृतम् 5, 30, 10. आच्युषं जागृतात् 4, 5, 7. जागृतम् RV. 7, 104, 25. VS. 34, 55. 20, 16. यदुपायिम् जाग्रतो यत्स्वपतेः RV. 10, 164, 3. Çat. Br. 2, 1, 4, 7. 3, 9, 3. 11, 11, 3, 1, 8. जागरित das Wachen 12, 9, 2. 14, 7, 1, 16. Cit. im Vedāntas. Brnp. Chr. 209, 22. — यदि जागर्षि — ऋणु मे ऽवकिता वचः R. 2, 63, 4. दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरुन्तति। दण्डः सुषेष्वा जागर्ति M. 7, 18. यदा स देवो जागर्ति 1, 52. Suçr. 1, 115, 19. Pañkāt. 44, 21. Bhāg. P. 4, 23, 35. यस्यां (निशायां) जाग्रति भूतानि Bhāg. 2, 69. पुरतः कृच्छकालस्य धोमान् जागर्ति पूरुषः MBh. 1, 8404. जागृत्यनिशं सदा 12, 7823. प्रतिबुद्धास्मि जागृमि 6518. समाधानं कृत्वा स्थिरतरदशो जागृत जनाः Çāntiç. 3, 4, 5. नैकः सुषेष्वा जागृयात् Pañkāt. V, 88. जजागार MBh. 1, 5926. सो ऽपसर्पेज्जागार यथाकालं स्वपन्नापि Ragh. 17, 51. जागरामास Vid. 48. गुन्ध्यं जागरिष्यामः — वयं निशाम् R. 2, 51, 3. तस्य गुन्ध्यं जागरिष्यामहे वयम् 86, 4. शयाना जाग्रमाणाश्च MBh. 13, 1274. जाग्रत् a) wachend M. 9, 302. MBh. 1, 5941. 3, 14501. क्तियर्थं च नरेन्द्रस्य जाग्रतो नयचतुषा R. 1, 7, 11. 3, 68. 36. Mrákū. 87, 25. Pañkāt. 62, 3. Kathās. 18, 329. जाग्रन् (!) 279. — b) der wache Zustand: जाग्रत्स्वप्नाभ्याम् M. 1, 57. जाग्रत्स्वपौ Bhāg. P. 7, 15, 61. Ind. St. 1, 301. 2, 35. Vedāntas. in Brnp. Chr. 209, 15. 218, 23. — 2) erwachen: प्रतिववशाद्वाक्ष्णो जजागार Pañkāt. 183, 6. यदा स्वामी जागर्ति तथा मया कर्तव्यम् Hit. 50, 14. — 3) wachen über, aufpassen auf; Aufsicht haben, herrschen über; mit einfachem loc. oder loc. mit अधि: गोषु प्राणेषु जागृहि AV. 3, 15, 7. 1, 30, 1. 19, 48, 5. सोमं व्रतेषु जागृहि RV. 9, 61, 24. वृजने 82, 4. तेन सत्येन जागृतमधि प्रचतुने पदे 1, 21, 6. (अप्सु) अजजाग्रास्वधि देव एकः 10, 104, 9. अत्रैवैधि पितृषु जागृहि त्वम् AV. 12, 2, 10. विधि राष्ट्र 13, 1, 9. 5, 19, 10. वित्ते ऽधि 19, 48, 6. तत्रे ऽधि जागृत् 24, 2. वयं राष्ट्रं जागृयाम पुराहिताः VS. 9, 23. इति शत्रुषु चन्द्रियेषु च प्रतिपिद्धप्रसरेषु जाग्रतो Ragh. 8, 23. जागर्ति कृच्छ्रे देवम् BHATT. 18, 11. — 4) die Aufmerksamkeit richten auf (dat.), bedacht sein auf: त्वं नः सोम सुक्रतुर्वयेधेयाय जागृहि RV. 10, 25, 8. अस्मिन्गृहे गार्हपत्याय जागृहि 85, 27. — 5) bewachen, passen auf; mit dem acc.: सा नखपदे स्तनमण्डले यदत्तं मया — जागर्ति रुन्ति विलोकयति Kaurap. 35. — 6) जागृवंम् munter, eifrig, unermüdet: वे रयि जागृवांसो अन्तु गमन् RV. 6, 1, 3. अर्दिति सचेते जागृवांसो दिवे दिवे 1, 136, 3. तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते 22, 21. 3, 10, 9. 29, 2. 7, 5, 1. 10, 91, 1. युवं मुगं जागृवांसं स्वदयः 8, 3, 36. — caus. aor. ved. अजागर, जागर्तम्, जिगर्तः erwecken, ermuntern, beleben: उषस स्तोमौ अश्विनावजोगः RV. 3, 58, 1. 6, 63, 1. 7, 67, 1. 10, 29, 1. अर्द्धरस्तां पृथ्वी अजोगः 75, 1. धियो हिन्वान उशतारिजोगः 10, 1. मनीषाम् 6, 47, 3. 1, 92, 6. जिगृतमस्मे रेवतीः पुरंधीः 158, 2. 7, 64, 5. जिगृत रायः सूनृता मृधानि 57, 6. klass. जागरयति P. 7, 3, 85. स्वामिनं कथं न जागरयसि Hit. 50, 4. aor. impers. अजागारि und अजागारि man liess wachen Vop. 18, 22. 24, 6. अजागारि रजनिम् 13.

— अनु bei Jmd (acc.) wachen: अन्वजागस्ततो रामम् R. 2, 50, 36.

— प्र die Wache halten, aufpassen auf (loc.), lauern auf (gen.): ततः प्रजागरं चक्रुर्वानराः BHATT. 14, 61. प्रजागरं चकारेरीक्षाम् 6, 2. अथ युद्धे संकुद्धो दीर्घं राज्ञः प्रजागरम् (das Metrum verlangt प्रजा०) MBh. 9, 1463. — Vgl. प्रजागर. — caus. aufwecken: संधीचीना यातव प्रेमजोगः RV. 10, 106, 1.